vinetur

सूखे ने पैदावार घटाई, इसलिए जर्मनी की 2026 अंगूर फसल अक्टूबर से पहले ही खत्म हो गई।

फ्रैंकोनिया में लगभग 320,000 हेक्टोलिटर उत्पादन की उम्मीद है, जो पिछले साल से करीब एक-चौथाई कम है, क्योंकि रिकॉर्ड-जल्दी पकाव ने मौसम को सिकोड़ा।

बुधवार, 30 सितंबर 2026



जर्मनी की 2026 अंगूर फसल अक्टूबर शुरू होने से पहले ही समाप्त हो गई, क्योंकि गर्म और बेहद शुष्क गर्मियों ने पकाव को आगे खिसका दिया और प्रमुख वाइन क्षेत्रों में पैदावार घटा दी।

देश के प्रमुख वाइन-उत्पादक क्षेत्रों में से एक फ्रैंकोनिया में, फसल लगभग 320,000 हेक्टोलिटर रहने की उम्मीद है, जो फ्रैंकोनियाई अंगूर उत्पादक संघ द्वारा उद्धृत आंकड़ों के अनुसार एक वर्ष पहले 432,000 हेक्टोलिटर से अधिक थी। इसका मतलब लगभग एक-चौथाई की गिरावट होगा। वहाँ औसत उपज पिछले वर्ष के 72 हेक्टोलिटर प्रति हेक्टेयर से घटकर 55 हेक्टोलिटर प्रति हेक्टेयर रह गई।

ज़ारलैंड में नुकसान और भी अधिक था। क्षेत्रीय अंगूर उत्पादक संघ को उत्पादन 35% से 40% तक घटने की उम्मीद है,

जबकि कुछ व्यक्तिगत एस्टेट्स ने 15% से 60% तक की गिरावट दर्ज की।

मुख्य कारण सूखा था। रिपोर्ट में उद्धृत आंकड़ों के अनुसार, फ्रैंकोनिया के कुछ हिस्सों में जनवरी से सितंबर के बीच प्रति वर्ग मीटर केवल लगभग 225 लीटर बारिश हुई, यानी सामान्य मात्रा का लगभग आधा। पानी की कमी से दाने छोटे रह गए और रस की मात्रा घट गई, जबकि गर्मी और तेज धूप ने पकने की प्रक्रिया तेज कर दी।

मंगलवार को wetter.net द्वारा प्रकाशित रिपोर्ट के अनुसार, इस साल जर्मनी के सभी वाइन-उत्पादक क्षेत्रों में फसल असामान्य रूप से जल्दी शुरू हुई, रिकॉर्ड शुरू होने के बाद से कभी भी इतनी जल्दी नहीं। फ्रैंकोनिया और ऊपरी मोज़ेल के किनारे, उत्पादकों ने अगस्त में तोड़ाई शुरू की। फ्रैंकोनियाई अंगूर उत्पादक संघ ने कहा कि वहाँ अंगूर 1 सितंबर को पूरी तरह पक गए, जो दीर्घकालिक औसत से लगभग 18 दिन पहले था।

इस तेज विकास ने फूल आने और फसल के बीच का समय छोटा कर दिया। फ्रैंकोनिया में, यह अंतर इस साल लगभग 85 दिन था, जबकि पारंपरिक रूप से यह 100 दिन होता है। एक प्रमुख उत्पादक सहकारी संस्था Winzergemeinschaft Franken ने 27 अगस्त से 19 सितंबर तक कटाई की, और 21 दिनों में काम पूरा कर लिया, जो उसका अब तक का सबसे छोटा harvest था।

ओएनोलॉजिस्ट किलियन श्यूरिंग ने कहा कि इस साल अलग-अलग अंगूर किस्में असामान्य रूप से जल्दी और लगभग एक ही समय पर सर्वोत्तम पकाव तक पहुंच गईं। इससे दाखबागों और सेलरों में काम सिमट गया और उत्पादकों के पास तोड़ाई की तारीखों को कई हफ्तों में फैलाने की बहुत कम गुंजाइश रही।

German Wine Institute ने कहा कि इस मौसम में छोटे, कम रसदार दाने बने और बेलों पर सूखे का तनाव पड़ा, खासकर युवा रोपण पर, जिनकी जड़ें अभी मिट्टी में पर्याप्त गहराई तक नहीं पहुंचतीं। पुरानी बेलें आम तौर पर शुष्क अवधियों से बेहतर निपट लेती हैं, लेकिन वे भी गर्मी की लंबी अवधि और सीमित वर्षा से प्रभावित हुईं।

ये आंकड़े इस बढ़ते प्रमाण को और मजबूत करते हैं कि जर्मनी का वाइन कैलेंडर बदल रहा है। रिपोर्ट में उद्धृत आंकड़ों के अनुसार, फूल आने और फसल के बीच की औसत अवधि अब लगभग 96 दिन है, जबकि 1971-2000 की अवधि में यह लगभग 102 दिन थी। यह बदलाव अकेले इस साल की कमी की व्याख्या नहीं करता, लेकिन यह पहले पकने की दीर्घकालिक प्रवृत्ति की ओर इशारा करता है।

मौसम का पैटर्न अभी ज्यादा नहीं बदला है। दक्षिण-पश्चिमी जर्मनी के आधे हिस्से में मध्य सप्ताह तक देर-गर्मी जैसी परिस्थितियाँ जारी रहने की उम्मीद थी, जहाँ अधिकतम तापमान 23 से 29 डिग्री सेल्सियस के बीच और ऊपरी राइन के पास लगभग 30 डिग्री तक संभव था। गुरुवार से पश्चिम की ओर से बारिश और अलग-थलग गरज-चमक के साथ बौछारें आने का पूर्वानुमान था, जिनमें सबसे भारी बारिश पश्चिमी क्षेत्रों में पड़ने की संभावना थी। इसके बाद तापमान 16 से 24 डिग्री के बीच लौटने की उम्मीद थी, जबकि रात का न्यूनतम तापमान 11 से 5 डिग्री के बीच रहने की संभावना थी।

दाखबागों के लिए यह बारिश तब आ रही है जब अधिकांश फल पहले ही तोड़े जा चुके हैं, इसलिए यह 2026 की फसल को बदलने में बहुत कम असर डालेगी। फिर भी यह गर्मियों में सूख चुकी मिट्टी के लिए कुछ मदद कर सकती है।

फ्रैंकोनिया और ज़ारलैंड में कम पैदावार का असर सिर्फ दाखबागों तक सीमित नहीं है, क्योंकि इससे जर्मनी के महत्वपूर्ण उत्पादन क्षेत्रों से उपलब्ध वाइन की मात्रा घटती है। वाइनरी, बॉटलिंग कंपनियों, थोक विक्रेताओं और खुदरा विक्रेताओं के लिए छोटी फसलें आपूर्ति को तंग कर सकती हैं और स्रोत-व्यवस्था तथा कीमतों पर दबाव डाल सकती हैं, खासकर अगर दूसरे क्षेत्र भी मौसम से जुड़ी हानियों की रिपोर्ट करें। पहले और तेज़ी से हुई फसल उन उत्पादकों पर संचालन संबंधी दबाव भी बढ़ाती है जिन्हें कम समय में श्रम, परिवहन और सेलर क्षमता की जरूरत होती है।

जर्मनी के घरेलू वाइन बाजार में फ्रैंकोनिया खास तौर पर महत्वपूर्ण है, क्योंकि इसका संबंध सफेद किस्मों और क्षेत्रीय पहचान से गहराई से जुड़ा है। पिछले वर्ष के स्तर से लगभग 112,000 हेक्टोलिटर की गिरावट उन उत्पादकों और

सहकारी संस्थाओं के लिए महत्वपूर्ण है जो मात्रा के साथ-साथ गुणवत्ता पर भी निर्भर हैं। ज़ारलैंड में अपेक्षित 35% से 40% की गिरावट का असर संभवत: छोटे एस्टेट्स पर सबसे ज्यादा पड़ेगा, जिनके पास एक कठिन मौसम के बाद सीमित सहारा है।

अंतिम उत्पादन आंकड़े, तैयार वाइनों में गुणवत्ता का स्तर, और इस वर्ष अन्य जर्मन तथा यूरोपीय क्षेत्रों का प्रदर्शन यह तय करेगा कि इसका पूरा व्यावसायिक असर क्या होगा। लेकिन 2026 की फसल पहले ही यह स्पष्ट कर चुकी है कि सूखा और गर्मी अब सिर्फ दाखबाग प्रबंधन का मुद्दा नहीं रहे। वे कटाई के समय, उत्पादन और व्यापक पेय बाजार में वाइन के प्रवाह को आकार दे रहे हैं।